Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

शिक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण का महत्व

साधना सिंह	शोधार्थी, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर.
डॉ. साक्षी शर्मा	शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर.

ABSTRACT:

उसी पुरानी एकाकी शिक्षा पद्धति से लोग ऊब चुके हैं, जिसमें हर विषय को अलग - अलग पढ़ाया जाता है। अब समय आ गया है कि ऐसी दीवारें तोड़ दी जाएं और शिक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण के महत्व को पहचाना जाए। विभिन्नशैक्षणिक क्षेत्रों से जानकारी और क्षमताओं को एकीकृत करके छात्रों को कठिन विषयों और चुनौतियों की अधिक गहन समझ प्रदान कर सकते हैं, साथ ही उन्हें वास्तविक दुनिया की समस्याओं के समाधान के लिए भी तैयार कर सकते हैं। यह बहुत जरूरी है कि हमारे छात्र इस समय में आलोचनात्मक और रचनात्मक तरीके से सोचना सीखें, और बहु-विषयक दृष्टिकोण उनकी पूरी क्षमता को उजागर करने की कुंजी है।

शिक्षण के लिए बहुविषयक दृष्टिकोण में कई विषयों या विषयक्षेत्रों से ज्ञान, अवधारणाओं और पद्धतियों को संयोजित करना शामिल है। बहुविषयक पाठ्यक्रम दृष्टिकोण शिक्षकों को अलग-अलग पढ़ाने के बजाय कई विषयों के बीच संबंधों को स्थापित करने के लिएप्रोत्साहित करता है जिससे विद्यार्थीसूचनाओं के अंतर्संबंध को समझनेमें सक्षम होते हैं और अपनेआसपास की दुनिया को बेहतरसमझ पाते हैं।

शिक्षण में बहुविषयकदृष्टिकोण के अनेक लाभ हैं :-

(1) सहयोग और टीमवर्क को बढ़ावा देताहै (2) समग्र शिक्षा (3) वास्तविक दुनियाकी समस्या का समाधान (4) बहुविषयक दृष्टिकोण रचनात्मकता को बढ़ाताहै (5) व्यापक समझ (6) आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करता है (7) बहुमुखी प्रतिभा प्रदान करता है (8) छात्रोंको उच्च शिक्षा के लिए तैयारकरता है। बहुविषयक दृष्टिकोण जटिलमुद्दों और कठिनाइयों को संबोधितकरने के लिए कई अकादमिक विषयोंसे ज्ञान और कौशल को जोड़ताहै।

KEYWORDS:

बहुविषयक, दृष्टिकोण, शिक्षण,महत्व, विभिन्न विषयों का ज्ञान।

प्रस्तावना:

शिक्षण के लिए बहुविषयक दृष्टिकोण में कईविषयों या विषय क्षेत्रों से ज्ञान, अवधारणाओंऔर पद्धतियों को संयोजित करना शामिलहै। यह शिक्षण में सबसे अच्छे तरीकोंमें से एक है।बहुविषयक दृष्टिकोण शिक्षकों को अलग-अलग पाठ्यक्रमपढ़ने के बजाय कई विषयों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे विद्यार्थी सूचनाओं केअंतर-संबंध को समझने में सक्षम होते हैं और अपने आसपास की दुनिया का बेहतर ढंग से समझ पाते हैं।

इस दृष्टिकोण में शिक्षकों को विभिन्न विषय क्षेत्रों को एक साथ मिलकर काम करना होता हैताकि ऐसी शिक्षण गतिविधियां बनाईजा सके, जिनमें अन्य विषयों की योग्यताओं और विषय-वस्तु का संयोजन हो।

इसका एक उदाहरण यह हो सकता है कि एक विज्ञान और इतिहास प्रशिक्षक मिलकर एक परियोजना विकसित कर सकता है, जिसमें छात्र किसी विशिष्ट आविष्कार के वैज्ञानिक और एतिहासिक पहलुओं की जाँच करते हैं। यह विधि छात्रों को यह देखने में मदद करती है कि ज्ञान किस तरह से जुड़ा हुआ है, जो समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच और ज्ञान के उपयोग को विभिन्न संदर्भों में बढ़ावा देता है। यह प्रदर्शित करने में मदद करता है कि विभिन्न क्षेत्र कैसे जुड़े हुए हैं और विभिन्न स्थितियों में जानकारी का उपयोग कैसे किया जा सकता है। अंतःविषय दृष्टिकोण छात्रों के लिए सीखने को अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बनाने का प्रयास करता है। इससे बहु-विषयक सोच विकसित होती है, जटिल विषयों की गहरी समझ बढ़ती है, तथा विद्यार्थी वास्तविक दुनिया की जटिलता के लिए तैयार हो जाते हैं। बहुविषयक दृष्टिकोणजटिल मुद्दों औरकठिनाइयों को संबोधित करने के लिए कई अकादमिक विषयों से ज्ञान और कौशल कोजोड़ता है। प्रत्येक अकादमिक विषय का अलग बहुविषयक दृष्टिकोण

उन्हें, अलग अध्ययन करने के बजाय-जोड़ने पर ध्यान केंद्रित करता है। शिक्षक अन्य शैक्षणिक क्षेत्र से जानकारी और प्रतिभाओं को शामिल करके कठिन विषयों और मुद्दों की अधिक व्यापक समझ प्रदान कर सकते हैं, साथ ही छात्रों की अलोचनात्मक सोचरचनात्मकता और टीमवर्क को भी बढ़ावा दे सकते हैं।

(1) सहयोग और टीमवर्क को बढ़ावा देता है:

शिक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण शिक्षण में कई शैक्षणिक पृष्ठभूमियों से छात्रों को एक साथ लाकर सहयोग और टीमवर्क को बढ़ावा देता है। छात्रों को एक ऐसे वातावरण से अवगत कराया जाता है जहां वे प्रभावी ढंग से संवाद करना और विचारों का आदान ये योग्यताएं न केवल शिक्षक शिक्षा में बल्कि भविष्य और जीवन के अन्य पहलुओं प्रदान करना सीख सकते हैं।- में भी आवश्यक हैं।

(a) छात्रों को विभिन्न पृष्ठभूमि के साथ काम करने का मौका मिलता है।

(b) दृष्टिकोण एवं विचारों का आदान-प्रदान।

(c) छात्रों को विभिन्न अवसर प्रदान करता है ताकि वे दूसरों के साथ मिलकर काम कर सकें।

(d) प्रभावी संचार को बढ़ावा दिया जाता है।

(2) समग्र शिक्षा:

बहुविषयक दृष्टिकोण छात्रों को विविध प्रकार के पाठ्यक्रमों से परिचित कराकर अधिक व्यापक शिक्षा प्रदान करता है। समग्र शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र वास्तविक दुनिया की स्थितियों से निपटने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं और बदलाव के लिए अधिक अनुकूल होते हैं।

(3) वास्तविक दुनिया की समस्याओं का समाधान:

ये विधियाँ छात्रों को समस्याओं को अलग वे अन्य छात्रों अलग दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रोत्साहित करने में सहायक हैं।- जिससे वे वास्तविक दुनिया की समस्याओं को सुलझाने के लिए तैयार, के साथ मिलकर समाधान विकसित कर सकते हैं, अत्यंत महत्व तेजी से बदलती दुनिया में यह हो सकें। पूर्ण है जहाँ आज की जटिल कार्यों के लिए व्यापक प्रतिभाओं और विचारों की आवश्यकता होती है।

(4) बहुविषयक दृष्टिकोण रचनात्मकता को बढ़ाता है:

शिक्षक और सीखने की प्रक्रिया में बहु विशेष दृष्टिकोण की शुरुआत के साथ छात्रों को रचनात्मक रूप से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में मदद करता है।

(5) व्यापक समझ:

इन तरीकों की मदद से छात्रों को जटिल चुनौतियों की पूरी समझ मिलती है। कई अकादमिक क्षेत्रों से ज्ञान और क्षमताओं को मिलाकर छात्र ऐसे संबंध और लिंक देख पाते हैं जिन्हें वे अन्यथा नहीं पहचान पाते।इन तरीकों से वे एक अधिक समग्र दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

(6) आलोचनात्मक सोच कौशल विकसित करता है:

विद्यार्थियों को मान्यताओं पर प्रश्न उठाने तथा चुनौतीपूर्ण स्थितियों के बारे में कल्पनाशील ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करके बहुविषयक दृष्टिकोण आलोचनात्मक चिंतन कौशल का निर्माण करता है।

(7) बहुमुखी प्रतिभा प्रदान करता है:

शिक्षण का बहुविषयक दृष्टिकोण अनुकूलनशीलता और लचीलापन प्रदान करता है। शिक्षक अभिनव और आकर्षक कक्षाएं डिजाइन कर सकते हैं जो छात्रों को आकर्षित करती है और शैक्षणिक क्षेत्रको मिलाकर सीखने को बढ़ाती है। यह अनुकूलनशीलता छात्रों को पढ़ाई में लगे रहने और उत्साही बने रहने में सहायता कर सकती है।

(8) छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करता है:

शिक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करता है। उन्हें कॉलेज और उसके बाद सफल होने के विषयक दृष्टिकोण छात्रों को विभिन्न प्रकार के वातावरण में- लिए आवश्यक विविध कौशल और ज्ञान से लैस करता है। बहु समायोजित करने में सहायता करता है।

निष्कर्ष:

छात्रों को वास्तविक दुनिया में सफलता के लिए तैयार करने के लिए शिक्षण के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। छात्र जटिल मुद्दों की व्यापक समझ हासिल कर सकते हैं, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता कौशल विकसित कर सकते हैं, वास्तविक दुनिया की समस्या समाधान के लिए तैयार हो सकते हैं, टीमवर्क कौशल को बढ़ावा दे सकते हैं, और बहुविषयकशिक्षण और सीखने के तरीकों का उपयोग करके सीखने में रुचि रख सकते हैं। इसके अलावा, शिक्षण के लिए बहु-विषयक दृष्टिकोण बहुमुखी प्रतिभा और लचीलापन प्रदान करता है, जिससे शिक्षकों को विषयों को अधिक आकर्षक और गतिशील तरीके से पढ़ाने में मदद मिलती है।

REFERENCES

1. सफाया, रघुनाथ, हिंदी शिक्षण विधि, पंजाब किताब घर, जालंधर।
2. मुकर्जी, संध्या, भाषा शिक्षण, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ।
3. पाण्डेय, रामशकल, हिंदी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. क्षत्रिया, के. मातृभाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

5. सिंह, निरंजन कुमार, माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ।

6. भाई योगेंद्रजीत, हिंदी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

7. सिंह, सावित्री, हिंदी शिक्षण, गया प्रसाद एंड संस , आगरा।